238 Ф
821
Н

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 821

B/20/11

891.431
OS69S

स्वराज्य पुकार

अथवा

देश को चेतावनी

IAL REC
RECEIVED.
30 MAR. 1931
RTMEN

मुर्दा भारत को जिला जायँगे मरते मरते।
नाम ज़िन्दों में लिखा जायँगे मरते मरते॥
हमको कमज़ोर समझ बैठे हमारे दुश्मन।
उनका अभिमान मिटा जायँगे मरते मरते॥

संपादक—
पं० कन्हैयालाल दीक्षित "इन्द्र"

प्रकाशक
गयाप्रसाद अवधबिहारी

प्रथमवार २००० | सन् १९३० ई० [मूल्य -)

मुद्रक—पं० द्वारकाप्रसाद तिवारी प्रिंटर व प्रोप्राइटर
भारत भूषण प्रेस लखनऊ

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
NO 821 22427
Date
GOVT. OF INDIA

स्वराज्य पुकार

अथवा

देश को चेतावनी

॥ बन्देमातरम् ॥

बोलिये सबमिल महाशय मन्त्र बन्देमातरम् ।
तीनों भुवन में गूंज जाये शब्द बन्देमातरम् ॥
बनजाय सुखदाई हमारा मन्त्र बन्देमातरम् ।
हो हमारी पाठ पूजा मन्त्र बन्देमातरम् ॥
मन्दिरो मस्जिद गुरुद्वारा व गिरजा हो यही ।
मज़हब बने बस हम सभों का एक बन्देमातरम् ॥
हाथ में हो हथकड़ी और बेड़ियाँ हों पाँवमें ।
गाओंगे उनको बजाकर गीत बन्देमातरम् ॥
इसलिये धिक्कार है सौ बार जो कहता नहीं ।
प्रेम में उन्मत्त होकर मन्त्र बन्देमातरम् ॥
भारत हमारा देव मन्दिर और मस्जिद भी यही ।
हिन्दू मुसलमां हों उपासक मन्त्र बन्देमातरम् ॥
सब ही से यह बोलना थे 'इन्द्र' तुमको चाहिये ।
भारत निवासी जयति गान्धी और बन्देमातरम् ॥

गजल उपदेश

किस नींद सोरहे हैं हिन्दोस्तान वाले।
खन्दक में गिर पड़े हैं ऊंचे निशान वाले ॥ किस०
राजा तेरे कहां हैं योधा तेरे कहां हैं।
दशरथ के राम लक्षिमन बाँकी कमानवाले ॥
ना ताक़ती पै तेरे आँसू बहा रहे हैं।
क्या सर ज़मीन वाले क्या आसमान वाले ॥ किस०
फ़ैशन बिगड़ गया है खाना खराबियों से।
बरबाद हो चुके हैं सब खानदान वाले ॥
फ़ैशन पै मर मिटे हैं कपड़े बिदेश के हैं।
मलमल पै हाथ धोते ढांके के थान वाले ॥
कहैं 'इन्द्र' अबतो जागो ऐसी कहाँ की नींदें।
आवाज़ दे रहे हैं देशी दुकान वाले ॥

स्वाधीनता की पुकार

न लेंगे चैन दमभर हम बिना स्वाधीनता पाये।
खुशी से दिल कड़ा करके सताओ जितना जी चाहे ॥
अभी लायक़ नहीं हो तुम न देने की ये बातें हैं।
मगर हम लेके छोड़ेंगे बनाओ जितना जी चाहे ॥
चलाओ डन्डे बन्दूक़ें निकालो तुम हवस दिलकी।
हमारे भाई से हमको पिटाओ जितना जीचाहे ॥
हमारी जान जाये देश हित गौरव समझते हैं।
खरा सोना कसौटी पर कसाओ जितना जीचाहे ॥
हमारी गूंजती है जय तुम्हारी जय कहाँ है अब।
तसल्ली के लिये डंके बजाओ जितना जीचाहे ॥

अब हम कर्तव्य पथ से एक तिल भी टल नहीं सकते।
ये घुड़की बन्दरों की सी दिखाओ जितना जीचाहे॥

"आज़ादी या मौत"

अबस जिंदगी का गुमाँ है, भरम है।
गुलामी में जीना न मरने से कम है॥ टेक॥
सितमगर ने हमको जो गफ़लत में पाया।
तुरत दामे फितरत में अपने फँसाया।
कहा और कुछ, और कुछ कर दिखाया।
दिखा करके अमृत ज़हर को पिलाया।
न उठने की ताक़त न चलने का दम है। गुलामी में जीना० ॥ १ ॥
वह कहते हैं हमसे कि खामोश रहना।
सहो चोटें दिल पर, ज़ुबां से न कहना।
रहे पेट खाली, रहे तन बरहना।
वफ़ादार हो तुम, जफ़ाओं को सहना।
खुली गर ज़ुबां, तो वहीं सर कलम है। गुलामी में जीना० ॥ २ ॥
दिए ज़ख्म पर ज़ख्म सैयाद तू ने।
सुनी बेकसों की न फरयाद तू ने।
न रहने दिया हम को आजाद तू ने।
किया हर तरह हमको बरबाद तू ने।
ये है ज़ुल्म कैसा, ये कैसा सितम है। गुलामी में जीना० ॥ ३ ॥
तुझे भी कसम है जो रहने कसर दे।
ये हैं ज़ख्म ताज़े नमक इनमें भर दे।
उठा अपना खंजर अभी कत्ल कर दे।
है वाजिब तुझे यह उड़ा धड़ से सर दे।
किया चाहता तू जो हम पर करम है। गुलामी में जीना० ॥ ४ ॥

सितमगर है, गर ताबो ताक़त पै नाज़ां।
तो हैं हम भी अपनी सदाक़त पै क़ुरबां।
यही दिल की हसरत, यही दिल में अरमाँ।
कि आज़ाद हों, या फ़ना होवें, दे जाँ।
हटेगा न पीछे, बढ़ा जो कदम है। गुलामी में जीना० ॥ ५॥

जियेंगे, तो आज़ाद होकर रहेंगे।
जहाँ में कि बरबाद होकर रहेंगे।
सितमगर ही या शाद होकर रहेंगे।
कि हम शा आबाद होकर रहेंगे।
खुली अब हैं आँखे, खुला सब भरम है। गुलामी में जीना० ॥ ६॥

हमें गो कि दिक्कत उठानी पड़ेगी।
उन्हें खुद बखुद मुंह की खानी पड़ेगी।
ये आदत पुरानी मिटानी पड़ेगी।
सरे बज्म गरदन झुकानी पड़ेगी।
हमें नाज़ बेजा उठाने से रम है। गुलामी में जीना० ॥ ७॥

चमन में न फिर गैर का कुछ खतर हो।
वतन अपना आज़ाद हो, औज पर हो।
बुज़ुर्गों का तुममें अगर कुछ असर हो।
दिखा दो जमाने में फिर ऊँचा सर हो।
ग़ज़ब का ये "अख्तर" का तर्ज़ रक़म है। गुलामी में जीना० ॥ ८॥

—स्वामी नारायणानंद "अख्तर"

वीर गर्जना

भारत के शेर जागो, बदला है अब ज़माना।
प्यारे वतन को हरदम, आज़ाद है बनाना ॥

मत बुज़दिलों को हरगिज़, तुम पास दो फटकने ।
आखिर तो दम अदम को, होगा कभी रवाना ॥
देवी स्वतंत्रता के, जल्दी बनो उपासक ।
निज पूर्वजों का तुमको, गर नाम है चलाना ॥
परदेशियों का इस दम, जो साथ दे रहे हैं ।
उनको हराम है अब, भारत का अन्न खाना ॥
दृढ़ सत्य पर रहो तुम, धारण करो अहिंसा ।
आ करके जोश में तुम, हुल्लड़ नहीं मचाना ॥
माता की कोख नाहक़, करते हो तुम कलंकित ।
वालंटियर बनो तुम, सब छोड़ दो बहाना ॥
दिल में झिझक न लाओ, आगे क़दम बढ़ाओ ।
है स्वर्ग के बराबर, इस वक्त सूली खाना ॥
"सरजू" समय यही है, कुछ करलो देश सेवा ।
दो दिन की जिंदगी है, इसका नहीं ठिकाना ॥

चेतावनी

गज़ल

हुआ है हुक्म ये जारी पहन लो केसरी बाना ।
सजाओ सैन अपनी तुम तुम्हें है जंग में जाना ॥
सुनो भारत के ऐ शेरो न दिल में सोच कुछ करना ।
सामना मौत का भी हो न चेहरे पर शिकन लाना ॥
बुज़ुर्गों के लहू का कुछ असर हो जिस्म के अन्दर ।
शिवा परताप की कर याद तुम भुजदंड फड़काना ॥
नमक सत्याग्रह भारत में अब जो हो चुका जारी ।
बनाओ खुद व घर घर में यही पैगाम पहुँचाना ॥

है। चलती गन मशीनों की अगरचे गोलियाँ सनसन।
दिखाना अपना सीना खोल मत पीछे को हट आना॥
अगर जो लाठियाँ तुम पर चलाये यह पुलिस फिर भी।
न करना ओफ़ मुँह से तुम न दिल में अपने घबराना॥
दमन की नीति करदेगी दमन उनको अवशि मित्रो।
अगर कुछ आह में तासीर है तो देखते जाना॥
अहिंसा के पुजारी बन दिखादो तुम गनीमों को।
कदम पीछे नहीं रखते हैं वीरों का यही बाना॥
बढ़ाओ "इन्द्र" तुम अपना क़दम इस युद्ध में पहिले।
सभी का ध्येय है भारत को अब आज़ाद करवाना॥

शहीदों की तमन्ना

गज़ल

नाम ज़िन्दों में लिखा जायेंगे मरते मरते।
लाज भारत की बचा जायेंगे मरते मरते॥
जान पर खेल ही जायेंगे अगर हम तो भी।
सैकड़ों को ही जिला जायेंगे मरते मरते॥
रूहो तन होंगे जुदा इनको तो होना ही है।
हम तो बिछुड़ों को मिला जायेंगे मरते मरते॥
वह कोई और हैं जो रोके रुलाके मरते।
हम रकीबों को हँसा जायेंगे मरते मरते॥
खाक में जिस्म किसी और का मिलता होगा।
हम तो भूखों को खिला जायेंगे मरते मरते॥
तिश्नालब आयेंगे जिस वक्त रकीबे नादाँ।
खून तक अपना पिला जायेंगे मरते मरते॥

मरने वाले जो मरे आन पै अपनी मरियो।
"इन्द्र" तो ये ही सिखा जायँगे मरते मरते॥

चेतावनी

गजल

अगर स्वराज्य भारत में तुम्हें इस साल में लाना।
तो हरगिज चाल बाजों की न अब तुम चाल में आना॥
विदेशी वस्तु को दिल से करो अब दूर ऐ मित्रो।
तुम अपने देश का धन अब विदेशों में न भिजवाना॥
अगर आपस के झगड़े हों तो उनको तै करो घर में।
कचहरी फ़ौजदारी में न हरगिज़ माल में जाना॥
अगर यह वक्त हाथों से गँवाया तो समझ लेना।
तो पशुओं की तरह सदहा तुम्हें हैं ठोकरें खाना॥
सदा जकड़े रहोगे फिर गुलामी की जंजीरों में।
जो छोड़ा ध्येय अपना तो है मुशकिल पार ही पाना॥
परिश्रम हम करैं डटकर मज़ा लूटैं वो लंदन में।
तुम्हें अब ऐसी परदेशी हुकूमत को है मिटवाना॥
मनाने को तुम्हें करते हैं बैठक राउंड टेबुल की।
न हरगिज़ ऐसे मक्कारों पै अब इतबार तुम लाना॥
ये कहते "इन्द्र" हैं तुमसे सुनो भारत के ऐ वीरो।
वतन आज़ाद अब करलो न गैरों के सहो ताना॥

चरखे का प्रचार

बहनों चर्खे से देश उद्धार है, चरखा काते। तो बेड़ा पार है।
चरखा गाँधी ने चलाया, जिसने चेस्टर का मान घटाया।
इसी चरखे पै हारो शृंगार है।। चरखा काते। तो बेड़ा० ॥
चर्खा चरख को नीचा दिखायेगा, और स्वराज्य कीराह बतायेगा।
इसी चरखे पै दारो मदार है।। चरखा काते। तो बेड़ा० ॥
चरखा कातेगा माल स्वदेशी, जिससे होंगे बिहाल बिदेशी।
चरखा भारत की तलवार है ॥ चरखा काते। तो बेड़ा० ॥

कृष्णानन्द उर्फ किशन बाई मिश्रित

भारतियों को सन्देश

(१)

विदेशी वस्त्र मत रक्खो, गुलामी की निशानी है।
अगर गैरत है कुछ तुम में अगर कुछ तुम में पानी है ॥
तुम्हें खद्दर चिकन है जामदानी कामदानी है।
किसी सूरत से नैया पार भारत की लगानी है ॥
समय है बीरता का बुजदिली का राग जो छेड़ा।
नहीं फिर बच सकोगे है पड़ा मँझधार में बेड़ा ॥

(२)

विदेशी वस्त्र का जो स्वार्थवश व्यापार करते हैं।
वो अपने हाथ अपने देश का संहार करते हैं ॥
बने मीठी छुरी हैं मातृभू पर वार करते हैं।
वृथा करते हैं अपने साथ पापाचार करते हैं ॥
स्वयं छल जाएँगे छलिया छलेगा इनको छल इनका।
बंधी हैं पाप की गाठें मिलेगा इनको फल इनका ॥

(३)

अदालत जाना तुम एक आन का जंजाल ही समझो।
बिछाया है वहाँ पर जाल का तो जाल ही समझो॥
गढ़ी जाती है बातें झूठ की टकसाल ही समझो।
वकीलों अहलकारों को दुखी का काल ही समझो॥
गरीबों के टकों से जेब अपनी गर्म करते हैं।
नहीं यह सोचते दिल में कि हम क्या कर्म करते हैं॥

(४)

वकालत के बिना क्या पेट अपना भर नहीं सकते।
न हो जो नौकरी तो फिर चला क्या घर नहीं सकते॥
मलिन अन्तःकरण है पाप से ये डर नहीं सकते।
दशा जो देश से करते हैं वह क्या कर नहीं सकते॥
ज़माना है किधर वह हैं किधर यह तो परख देखें।
हृदय कहता है क्या इनका हृदय पर हाथ रख देखें॥

(५)

गरज़ यह है कि है अवसर कठिन संग्राम का आया।
बहुत सोये जवानो वक्त है अब काम का आया॥
उठो बाँधो कमर बीड़ा तुम्हारे नाम का आया।
अगर मन में तुम्हारे मोह कुछ धन धाम का आया॥
उसे ममता समझकर व्रत न अपना भंग होने दो।
विजय होगी तुम्हारी धर्म की यह अंग होने दो॥

(६)

पड़ी हो हतकड़ी बेड़ी पड़ा हो तौक गर्दन में।
छिड़ी हो तान आज़ादी की जंजीरों की झनझन में॥
खड़े हो तान कर सीना निडर गोलों की सनसन।
न आये मैल तेवर पर न शंका हो कभी मन में।

बली सत्याग्रही का बाल बाँका कर नहीं सकते।
अमृत पुत्रो! अमर यश लो अमर हो मर नहीं सकते॥

खंजर की।

"त्रिशूल"

गज़ल

सुना है तेज़ करते हैं दुबारा धार खंजर की।
करेंगे आज़मायश क्या मुकर्रर वह मेरे सर की॥
सबब पूछा तो यों बोले नहीं ज़ाहिर खता कोई।
मगर कुछ देख पड़ती है शरारत दिल के अन्दर की॥
उजाड़े घोंसले कितने चमन बरबाद कर डाले।
शरारत उनकी नस नस में भरी है खूब बन्दर की॥
चलेंगी कब तलक देखें यह बन्दर घुड़कियां उनकी।
नचावेगी उन्हें भी एक दिन लकड़ी क़लन्दर की॥
मेरे दर्दे जिगर में आह में नाले में शीवन में।
नज़र आती है हरसू सूरते ज़ालिम सितमगर की॥
खमीदा करके गर्दन को कहां तेग आज़माई हो।
रह गई क़ब्ज़ये क़ातिल में खाली मूठ खंजर की॥

भविष्य वाणी

गज़ल

७ अप्रैल सन् १९३० के वर्तमान से उद्धृत

लिखी है देहली के एक ज्योतिषी ने यह भविष्यबाणी।
मैं लिखता हूँ वही कुछ हाल जो कुछ आज कल होगा॥
प्रथम अप्रैल से उन्नीसवीं अप्रैल तक यारो।
महात्मा की गिरिफ्तारी की चर्चा का शोगल होगा॥
मगर होगी गिरिफ्तारी न सोला पेप्रिल तक फिर।

बनाएँगे मगर श्री गांधी कारज सफल होगा ॥
व सोला एप्रिल से तेइसवीं अप्रैल के अन्दर ।
गिरफ्तारी की है सम्भावना मसला न हल होगा ॥
अगर इस बीच में गांधी हुये नहिं कैद ऐ मित्रो ।
पाँच से आठ मई को कैद हो इसमें न बल होगा ॥
और अप्रैल सोला से आठवीं जून तक जग में ।
होयगा फिर दमन घनघोर रुख उसका प्रबल होगा ॥
नतीजा उसका यह होगा कि लाखों जेल जायेंगे ।
वीर है वह जो अपने दृढ़ प्रतिज्ञा पर अटल होगा ॥
आठवीं जून से फिर दूसरी जौलाई तक सुनिये ।
दमन होजायगा ठंढा व दिल उनका बिकल होगा ॥
दूसरी फिर जुलाई से सितम्बर तीन तक में फिर ।
महात्मा गांधी का काम फिर जगमें सबल होगा ॥
तभी सरकार वैदेशी सिमट कर एक कोने में ।
ये देखेगी कि सच्चा ज्योतिषी का क्या रमल होगा ॥
अन्त लाचार होकर तीन से ग्यारा सितम्बर तक ।
गिरफ्तारी करेगी और नहीं कुछ भी खलल होगा ॥
बहुत भारी उठाना हानि हो सरकार को इसमें ।
लिखा मज़मून यह जो कुछ नहीं रद्दो बदल होगा ॥
और इक्कीस अक्टोबर नवम्बर ग्यारा के अन्दर ।
खुशी से ग्यारा शर्तों पर उन्हें करना अमल होगा ॥
तीसरी जनवरी से फ़रवरी हो बीस की जिस दिन ।
अचल होगी यही शर्तें व अपना फिर दखल होगा ॥
अगर ईश्वर की दाया है महात्मा की विजय होगी ।
"बिमल" आनंद होगा दिल खिला मिस्ले कमल होगा ॥

* इति *